पूर्ण तेजस्विता प्रदायक सूर्य शक्ति दीक्षा

सूर्य ग्रहण सूतककाल साधना पूजा दीक्षा मुहुर्त 12 अगस्त प्रातः 09:12AM से 13 अगस्त प्रातः 06:15AM तक

पुराणों में सूर्य देव को जगत की आत्मा तथा ऊर्जा का मुख्य स्त्रोत और नवग्रहों का राजा (स्वामी) बताया गया है। सूर्य एकमात्र ऐसे देवता हैं जिन्हें हम साक्षात देख सकते हैं। सूर्य सभी चराचर जगत के पाप-पुण्य का हरण कर उन्हें भस्मीभूत करने वाले हैं। इनकी नियमित गति के कारण ही वर्ष में छः ऋतुएं बनती हैं।

सूर्य प्रकाश पुंज है। उसमें असीम प्रकाश है। इस असीम प्रकाश के कारण ही सूर्य के जीवन में स्वस्ति है। हर मनुष्य की सोच यही होती है कि वह सूर्य की भाँति ही अपने भीतर असीम प्रकाश को प्रज्वलित कर सके। वह तृण से लेकर ईश्वर-पर्यन्त सब पदार्थों के सम्बन्ध में भांति-भांति से विद्या-विज्ञान सीख सके। मनुष्य को भी सूर्य की भांति अपने जीवन में तेजस्वीता से युक्त होने की लालसा होनी चाहिये जिससे हमारे जीवन में उत्साह, बल, स्फूर्ति, तेजस्विता और आगे बढ़ने की भावनाओं का विस्तार हो सकेगा परन्तु इस लालसा के साथ हमें यह प्रयत्न भी करना है कि हमारा जीवन वास्तव में सूर्य के चेतना तथा तेजस्वीता से परिपूर्ण हो सके। हमारे जीवन में सूर्य की उष्णता और चन्द्रमा की शीतलता का समन्वय हो सके। और हम अपने प्रकाश-गुण से, प्रकाश-पुंज से, अपने ज्ञान-गुण से, अपनी समझ-शक्ति को भली-भांति विकसित कर सकें।

वेदों में सूर्य देव को जगत की आत्मा कहा गया है, जीवनदाता, आरोग्य प्रदाता कहा गया है। निश्चय हमें ही करना है कि हमें जीवन में पूर्ण तेजस्वीता से युक्त होना है या अपने जीवन को नारकीय और दुर्भाग्य से परिपूर्ण करना है। परन्तु हमारे अन्दर वह शक्ति कैसे व्याप्त हो सकेगी? जिससे हम सूर्य तथा चन्द्र की तरह संसार का कल्याण कर सकेंगे।

अपने अन्दर योग्यता हासिल करने के लिये प्रत्येक साधक को अपने सद्गुरु, अपने ईष्ट का मार्ग दर्शन प्राप्त करना चाहिये। सद्गुरु तो सदैव अपनी शक्तियों को संसार और अपने शिष्य के उपकार में लगाते खर्च करते हैं। उनके अंदर संसार के समस्त प्राणियों के दुःख-दर्द मिटाने का सामर्थ्य व्याप्त होता है। सूर्य ग्रहण अपने आप में सब कुछ प्राप्त कर लेने का पर्व है। हमारा जीवन तभी संतुलित हो सकता है जब हमारे जीवन में प्रकाश, उष्णता और शीतलता; इन तीनों गुण का समान समन्वय हो। अतः दीक्षा के माध्यम से शक्ति प्रत्येक साधक को प्राप्त करनी चाहिये।

सूर्य और चन्द्रमा सदैव कल्याण के मार्ग पर ही चलते रहते हैं। विशेष रुप से राहु और केतु के वक्री होने पर सूर्य का प्रभाव सृष्टी में आच्छादित होता है। अतः इस विशेष पर्व पर साधक को दीक्षा अवश्य ही ग्रहण करनी चाहिये। ताकि उनके जीवन के समस्त विकार सूर्य की तेजस्विता में आहुत हो सकें। जिससे उसका जीवन सूर्य और चन्द्रमा की तरह ही कल्याणकारी दिशा की ओर अग्रसर हो जाता है और उनके जीवन में अडिगता तथा दृढ़ संकल्प जैसे गुणों का समावेश होने लगता है।

पूर्ण तेजस्विता प्रदायक सूर्य शक्ति दीक्षा न्यौछावर ₹1800

दीक्षा हेतु नूतन फोटो व न्यौ. राशि कैलाश सिद्धाश्रम जोधपुर 7568939648
न्यौ. राशि NIDHI SHRIMALI SBI UIT Branch Jodhpur A/c No.:20287318460
Branch Code: 006590 MICR Code: 342002010 IFSC: SBINN0006490
आश्रम:कैलाश नारायण धाम E1077 सरस्वती विहार दिल्ली-34 011-45058768 9950980966
सद्गुरूदेव जी के साधनात्मक कार्यक्रम GurudevKailash YouTube KAILASH SIDDHASHRAM पर देखे।